Degree II
Paper 4
Module - 1 **Heckscher Ohlin Theory**

हेक्सचर - ओहलिन का सिद्धान्त रिकार्डो के तुलनात्मक लाभ सिद्धान्त का विरोध नहीं करता बल्कि पूरकता प्रदान करता है। रिकार्डो का तुलनात्मक लाभ सिद्धान्त यह मत प्रस्तुत करता है कि दो देशों में तुलनात्मक लागत अन्तर के कारण विदेशी व्यापार होता है किन्तु रिकार्डो का सिद्धान्त यह नहीं बतलाता है कि दो देशों में उत्पादन लागत में अन्तर क्यों उत्पन्न होता है। इस बात का उत्तर हेक्सचर - ओहलिन ने अपने सिद्धान्त में प्रस्तुत किया है।

हेक्सचर - ओहलिन ने रिकार्डो के सिद्धान्त की कुछ मान्यताओं से अपनी असहमति जताई थी और यह मत व्यक्त किया था कि,

(i) तुलनात्मक लागत का सिद्धान्त सब प्रकार के व्यापार पर लागू होता है तथा विदेशी व्यापार इसका अपवाद नहीं है।

(ii) उत्पत्ति के साधनों में गतिशीलता का अभाव केवल विदेशी व्यापार का ही विशेष लक्षण नहीं है जैसा कि प्रतिष्ठित सिद्धान्त में कहा गया है वरन् एक ही देश के विभिन्न क्षेत्रों में भी साधनों की गतिशीलता का अभाव पाया जाता है।

ओहलिन ने बताया कि जिस प्रकार एक ही देश में श्रम और पूंजी में गतिशीलता पायी जाती है उसी प्रकार विभिन्न देशों में भी इन साधनों में गतिशीलता होती है। इस आधार पर ओहलिन ने यह स्पष्ट किया कि गृह व्यापार और विदेशी व्यापार में उतना व्यापक अन्तर नहीं है जितना कि प्रतिष्ठित अर्थशास्त्रियों ने बताया था। ओहलिन के अनुसार विभिन्न राष्ट्र मात्र विभिन्न क्षेत्र हैं जिनमें राष्ट्रीय सीमाएं, प्रशुल्क बाधाएं एवं भाषा, रीति रिवाजों की भिन्नता के कारण भेद स्थापित हो जाता है परन्तु ये भिन्नताएं विभिन्न देशों में स्वतंत्र व्यापार के स्थाई बाधाएं न होकर अस्थायी रहती हैं। क्षेत्रीय व्यापार के साथ राष्ट्र की सीमाएं बदल जाती हैं। इन्हीं बातों के आधार पर ओहलिन ने बताया कि विदेशी व्यापार के लिए पृथक सिद्धान्त की आवश्यकता नहीं है वरन् जिस मूल्य के सामान्य सिद्धान्त को अन्तर्क्षेत्रीय व्यापार पर लागू किया जाता है उसे विदेशी व्यापार पर भी लागू किया जा सकता है।

जहां तक मूल्य के सामान्य सन्तुलन का प्रश्न है यह एक देश या क्षेत्र के एक बाजार पर लागू होता है। ओहलिन का मत है कि उक्त सन्तुलन केवल समय तत्व पर विचार करता है एवं क्षेत्र तत्व की अवहेलना करता है। परन्तु दो कारणों से आर्थिक जीवन में क्षेत्रों का महत्वपूर्ण स्थान है (i) कुछ सीमा तक उत्पत्ति के साधन किन्हीं न किन्हीं क्षेत्रों तक सीमित रहते हैं (ii) परिवहन लागत तथा अन्य बाधाएं वस्तु के स्वतंत्र प्रवाह को सीमित करती हैं।

Ajanta Products Oxford

Scanned with CamScanner

ओहलिन ने स्पष्ट किया कि यदि सामान्य मूल्य के सिद्धान्त में संशोधन को सही स्थापित कर लिया जाता तो इसे विभिन्न क्षेत्रों एवं विभिन्न देशों के बहुत से बाजारों के मूल्य निर्धारित करने के लिए प्रयुक्त किया जा सकता है। अतः कहा जा सकता है कि विदेशी व्यापार का सिद्धान्त एक बहु बाजार का सिद्धान्त है। क्योंकि ओहलिन ने अपना सिद्धान्त सामान्य सन्तुलन सिद्धान्त पर आधारित किया है विदेशी व्यापार के आधुनिक सिद्धान्त को सामान्य सन्तुलन का सिद्धान्त भी कहते हैं।

हेक्सचर – ओहलिन के सिद्धान्त को निम्न पंक्तियों में व्यक्त किया जा सकता है " दो देशों में व्यापार वस्तुओं की कीमतों में सापेक्षिक अन्तर के कारण होता है तथा यह अन्तर दो कारणों से होता है (i) प्रथम तो यह कि उत्पत्ति के साधनों की कीमत में सापेक्षिक अन्तर होता है और (ii) द्वितीय यह कि विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में उत्पत्ति के साधनों की आवश्यकता में भी सापेक्षिक भिन्नता होती है। उत्पत्ति के साधनों की कीमतों में सापेक्षिक अन्तर इसलिए होता है कि दो देशों में साधनों की सीमितता या उपलब्धता में सापेक्षिक अन्तर होता है। हेक्सचर के शब्दों में " विदेशी व्यापार की पूर्व आवश्यकताएं निम्नवत् रहती हैं— विभिन्न सापेक्षिक दुर्लभता अर्थात विनिमय करने वाले देशों में उत्पत्ति के साधनों की सापेक्षिक कीमतों में भिन्नता और विभिन्न वस्तुओं के उत्पादन में उत्पत्ति के साधनों का विभिन्न अनुपात।

सिद्धान्त की मान्यताएं — हेक्सचर ओहलिन का सिद्धान्त निम्नलिखित मान्यताओं पर आधारित है

(i) व्यापार के लिए छोटे मॉडल को लिया गया है जिसमें दो देश, दो वस्तुएं और उत्पत्ति के दो साधन हैं।
(ii) दोनों देशों में वस्तुओं एवं उत्पत्ति के साधन में पूर्ण प्रतियोगिता है।
(iii) दोनों देशों में न तो कोई व्यापार की बाधा है और न परिवहन व्यय होता है।
(iv) प्रत्येक देश में उत्पत्ति के साधन पूर्ण रूप से गतिशील हैं किन्तु दोनों देशों के बीच उत्पत्ति के साधनों में गतिशीलता का अभाव है।
(v) दोनों देशों में उत्पत्ति के दोनों साधनों के अनुपात में भिन्नता है।
(vi) दोनों देशों में विभिन्न वस्तुओं का उत्पादन फलन भिन्न भिन्न है किन्तु दोनों देशों में प्रत्येक वस्तु के लिए उत्पादन फलन समान है।
(vii) प्रत्येक देश में उत्पादन उत्पत्ति समता नियम के अन्तर्गत होता है।
(viii) विभिन्न वस्तुओं के लिए उत्पादन फलन इस प्रकार है कि साधनों की तीव्रता के द्वारा पृथक किया जा सकता है।
(ix) दोनों देशों में उपभोक्ताओं का अधिमान एक समान है।
(x) उत्पत्ति के दोनों साधनों को दोनों देशों में पूर्ण रोजगार प्राप्त है।
(xi) प्रत्येक देश में साधनों की मात्रा, मांग की दशाएं तथा उत्पादन की भौतिक दशाएं स्थिर हैं।

Scanned with CamScanner